Paapa Ke Sapne

A heartfelt poem by Pritun

हर पापा के कुछ सपने होते हैं,
सारी उम्मीदें अपने होते हैं।
भरोसा करते हैं बेटे पे भरपूर,
ताकि आगे जाकर बने वो मशहूर।

मस्ती बहुत कर लिए हैं मेरे भाई,
अब जज्बात बदलो।
आज जानना है जीवन का भार,
तो अपने पापा से पूछ लो।

उम्मीदें बहुत करते हैं पापा हमसे,
कुछ बड़ा करके दिखा दे,
और अपने पापा के नाम के लिए,
दुनिया में एक ऊंचा स्थान बना दे।

पापा सीना ठोक कर कहते हैं,
मेरा बेटा कुछ बड़ा करेगा।
अगर उन्हीं का बेटा उम्मीदें तोड़े दे,
तब उनका सर झुक जाता है।

इसीलिए मैं कहता हूँ मेरे भाई,
पापा के उम्मीदों को टूटने मत देना,
और दुनिया के सामने उनको गर्व से,
झुकने मत देना, झुकने मत देना।

The End

This poem is written by Pritun.

Summary

This poem, titled 'Papa Ke Sapne,' explores a child's reflections on a father's aspirations and expectations. It highlights the father's hopes for his child's success and the emotional impact of either fulfilling or disappointing those dreams. The poem emphasizes the importance of honoring a father's faith and ensuring he feels proud.